नारी शक्ति

-ब्र.कु.संध्या

भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का जो संतुलन देवियों में है, उसका आज की नारी में सर्वथा अभाव दिखाई देता है। एक-पक्षीय अनुसरण के सन्दर्भ में, भौतिक क्षेत्र में उसने एक से बढ़कर एक ऊँचाइयों को छुआ है परन्तु दूसरे पक्ष अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना करने से उसका यह प्रयास पूर्ण सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है।

भारतीय संस्कृति में नारी का गौरवपूर्ण, पूज्य स्वरूप एवं आदि-शक्ति देवी के रूप में सर्व गुण सम्पन्न स्वरूप विशेष प्रतिष्ठित है। इसमें तपस्या की देवी उमा, धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती एवं शक्ति की देवी दुर्गा मुख्य हैं।

आज की नारियां इन्हीं शक्तियों की वंशज हैं परन्तु भौतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का जो संतुलन आदि देवी में है, उसका आज की नारी में सर्वथा अभाव दिखाई देता है। एक-पक्षीय अनुसरण के सन्दर्भ में, भौतिक क्षेत्र में उसने एक से बढ़कर एक ऊँचाइयों को छुआ है परन्तु दूसरे पक्ष अर्थात् आध्यात्मिक मूल्यों की अवहेलना करने से उसका यह प्रयास पूर्ण सकारात्मक परिणाम नहीं दे रहा है।

वर्तमान नारी भी अपनी मनोकामनायें पूर्ण करने के लिये ईशभक्ति करती है। कुलवधू के रूप में घर-परिवार को धन-धान्य से सम्पन्न करने के प्रयास के कारण उसे लक्ष्मी का पद प्राप्त होता है। माँ सरस्वती की वारिस बनकर आज वह शिक्षा एवं अध्ययन के क्षेत्रों में बड़ी-बड़ी उपाधियाँ प्राप्त कर रही है। माँ दुर्गा का अनुसरण करते हुये सेना व पुलिस में अपना योगदान देकर वह देश के शत्रुओं एवं असामाजिक तत्वों के नाश में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। परन्तु फिर भी उसमें आदि शक्ति की तुलना में दिव्यता, पवित्रता और गुण सम्पन्न स्थिति का अभाव है। अब प्रश्न उठता है कि उसमें ये दिव्यगुण कहाँ से आयेंगे? इन आदि शक्तियों को किसने इन गुणों से सजाया? उसी आध्यात्मिक वैभव को पुन: विकसित करने की आवश्यकता है।

आदि शक्ति का स्रोत-अनादि, आदि पिता

नारी को पुन: आदि शक्ति के पूज्य स्थान पर प्रतिष्ठित करने का कार्य, निराकार परमपिता परमात्मा शिव संगमयुग पर, परमधाम से इस साकार सृष्टि में आदि पिता ब्रह्मा के साकर तन में अवतरित होकर करते हैं। परमात्मा शिव ही सर्व आत्माओं के अविनाशी,अनादि परमपिता हैं। परमात्मा शिव द्वारा प्रदत्त ज्ञान और योग की शिक्षा से नारी में आध्यात्मिक शक्ति का संचार होने लगता है। अनादि गुणों के अनुभव से उसका सोया स्वमान जागृत हो जाता है और इस प्रकार परमात्मा शिव एवं प्रजापिता ब्रह्मा की अलौकिक मार्गदर्शना से साधारण नारी शक्ति-स्वरूपा बन जाती है।

परमपिता परमात्मा आध्यात्मिक रूचि वाली कन्याओं-माताओं का एक विशाल संगठन तैयार करते हैं और पतित सृष्टि को पावन बनाने के पुनीत कार्य में उन्हें ही निमित्त बनाते हैं। कमलपुष्प के समान न्यारा, पवित्र और निर्लिप्त जीवन बनाकर ईश्वरीय ज्ञान की समझ, सहज राजयोग के अभ्यास तथा दिव्य गुणों की धारणा द्वारा पवित्रता के आसन पर विराजमान होकर, ईश्वरीय सेवा के महान कार्य में नारी सहायक बन जाती है। नारी को, ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सृष्टि के आदि, मध्य व अन्त का ज्ञान होने के साथ-साथ स्वस्वरूप, स्वलक्ष्य, स्वधर्म की भी जागृति आ जाती है। इस शक्ति से वह स्वयं को, समाज में अपने प्रति प्रचलित कुमान्यताओं और बन्धनों से मुक्त कर पाती है। राजयोग के अभ्यास से उसमें तपस्या की शक्ति भर जाती है, जिससे विघ्न उसे पथ से विचलित नहीं कर पाते। लक्ष्मी-नारायण बनने के लक्ष्य को सामने रखने से दिव्य गुणों की धारणा सहज ही जीवन में होने लगती है। इसी आधार पर विश्व परिवर्तन के महान कार्य में परमात्मा शिव की पूर्ण सहयोगी भुजा के रूप में वह कार्य कर रही है।

नारी-परिवार रूपी रथ का आधार

संसार में प्रत्येक व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है। अनेक परिवारों से समाज, समाज से राष्ट्र एवं राष्ट्र से इस वृहद विश्व का निर्माण हुआ है। परिवार को यदि एक सुन्दर एवं सुसज्जित रथ मानें तो स्त्री एवं पुरुष इस परिवार रूपी रथ के दो पहिये हैं। परिवार की उन्नति एवं संतुलित विकास के लिये दोनों पहियों का समान एवं मज़बूत होना आवश्यक है। परन्तु हम देखते हैं कि हर युग में नर एवं नारी की स्थिति एक समान नहीं रही है वरन् परिवर्तित होती रही है।

सतयुग में, जो सृष्टि का आदिकाल था, नर एवं नारी दोनों को समान अधिकार थे तथा नारी को देवीपद व पूर्ण-सम्मान प्राप्त था। यहाँ श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का सम्पूर्ण सुख-शान्ति से सम्पन्न अटल दैवी स्वराज्य था। 1250 वर्ष पश्चात् श्री राम एवं श्री सीता के राज्य वाले त्रेतायुग का आरंभ हुआ, जहाँ सतयुग की तुलना में नर एवं नारी में दो कलाएँ कम थीं परन्तु फिर भी नारी का स्थान यथावत् सम्मानपूर्ण एवं समान था। इन दोनों युगों के लिये ही गायन है, नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता। लेकिन त्रेतायुग के पश्चात् द्वापरयुग में नारी की स्थिति में तीव्रगति से परिवर्तन हुआ। देह-अभिमान के कारण समाज में पुरुष प्रधान व्यवस्था होने लगी और नारी को पुरुष से निम्न दर्जे का आंका जाने लगा। पुरुष का प्रकृति पर विजय प्राप्त करना और आत्मा को पुरुष तथा प्रकृति को स्त्रीलिंग कहना, इनके यथार्थ भाव को न समझने के कारण पुरुष तन की आत्मा, स्त्री तन की आत्मा का शोषण करने लगी। इस प्रकार नारी, अनेक प्रकार के शोषण, अत्याचार एवं भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार होने लगी। उसकी स्थिति दीन-हीन याचक जैसी होने लगी। इस असमानता से उत्पन्न दु:ख की मुक्ति के लिये अनेक धर्मपिता सद्गुणों का उपदेश देने के लिये अवतरित होने लगे परन्तु नारी को कमतर समझने का यह दौर समाप्त नहीं हुआ और कलियुग में स्थिति और भी दयनीय हो गई। नारी आए दिन बलात्कार, मारपीट, हत्या तथा अमानवीय अत्याचारों की भुक्तभोगी बनने लगी। परिणामस्वरूप परिवार रूपी रथ असंतुलित होकर बिखरने लगा। कलियुग के अन्तिम समय में अबलाओं की पुकार सुनकर स्वयं सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ निराकार परमात्मा शिव परमधाम से पिताश्री ब्रह्मा के साकार तन में अवतरित होकर नारी को उसका खोया सम्मान एवं गौरव पुन: प्राप्त करवाते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग के द्वारा उसके सुषुप्त दैवी गुणों एवं शक्तियों को पुन: जागृत कर उसे देवी पद पर आसीन करते हैं। यह श्रेष्ठ ईश्वरीय कर्तव्य अभी चल रहा है। अभी ही नारी अपने जीवन को श्रेष्ठ हीरे-तुल्य बना सकती है और घर-संसार को आश्रम बनाकर स्वर्ग समान बना सकती है। याद रखिये - अभी नहीं तो कभी नहीं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय नारी शक्ति का एक जीता-जागता अनोखा मिसाल है। यह विश्वविद्यालय स्थापना काल से ही देश-विदेश को ऐसा नेतृत्व प्रदान करता आ रहा है जिसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। 30-40 के दशक में जब महिलाओं को हेय दृष्टि से देखा जाता था तब 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा' ने कन्याओं और माताओं को आगे कर अध्यात्म की अलख जगाई और विश्व इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की। उन्होंने परमात्मा शिव बाबा की प्रेरणानुसार इन्हें हर गुण और कला से सम्पन्न बनाया। उन्होंने नारी शक्ति को आगे कर यह सिद्ध कर दिखाया कि महिलाएं भी किसी से कम नहीं हैं। आज भौतिकता से लुप्त नारी किसी दृष्टि से मनुष्य के हित में नहीं है। संस्कार विहीन नारी समाज मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी है। परन्तु चिंता की जरूरत नहीं क्योंकि परमात्मा शिव की शिव-शक्तियाँ ब्रह्माकुमारियाँ बहनें व मातायें नए समाजके निर्माण का श्रेष्ठ कार्य रह रही हैं...

Women

Will power - मनोबल - को प्रतिबिम्बित करता है। विश्व इतिहास में ऐसे अनेक मिसाल हैं जब नारियों ने अपने दृढ़ मनोबल द्वारा कठिन परिस्थितियों में विजय प्राप्त की।

Oneness - एक ही लगन में मगन हो जाना - जहाँ भी मनुष्य की लगन जग जाती है, वहाँ उसे सफलता प्राप्त हो जाती है। फिर चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक या आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र हो। मीराबाई ने एक कृष्ण से लगन लगाकर, अपने आराध्य समान उच्च स्थिति को प्राप्त किया।

Might - शक्ति - जब आत्मा की आन्तरिक शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं तो नारी अबला नहीं, शक्ति स्वरूपा बन जाती है। शिव शक्ति, दुर्गा, काली, अम्बा बनकर वह विश्व से दुर्गुणों एवं बुराइयों का विनाश करने के महान् कार्य में सहयोगी बन जाती है।

Enlightment - दिव्यता - ज्ञान के प्रकाश से स्वाभाविक गुणों जैसे स्नेह, त्याग, सहनशीलता, करुणा आदि में दिव्यता आ जाती है और नारी सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली जगदम्बा बन जाती है।

Nobility - उदारता - माँ का हृदय भी उदार, विशाल होता है। अपने इस गुण से वह परिवार के सभी सदस्यों की कमियों को समाकर, परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है।

नारी-शक्ति की अभिव्यक्ति

सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। नारी कठिन परिस्थितियों के समय यातनाओं को सहकर भी अपने आवेगों पर नियंत्रण रखने में अत्यधिक कुशल है। वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अधिकतर हिंसात्मक तौर-तरीके नहीं अपनाती। प्रकृति के समान नारी के स्वभाविक संस्कार, सहनशीलता, धैर्य, उदारता एवं दातापन के हैं। प्रकृति अपनी असीम सम्पदा से विश्व को सम्पन्न करती है और नारी अपने हर कार्य से परिवार में उन्नति एवं सम्पन्नता लाने का प्रयास करती है। उदाहरण के लिये प्रकृति में पानी के चक्र को लें। सागर का पानी सूर्य की गर्मी से बादल बनकर जब खेत-खलिहानों, पहाड़ों, मैदानों में बरसता है तो जड़, चेतन सभी प्रकृति की इस देन से खिल उठते हैं। इसी प्रकार, नारी भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों की गर्मी को सहकर भी परिवार के सदस्यों को अपने प्रेम, सरलता, ममता से हर्षित रखने का प्रयास करती है। अपने इन गुण रूपी मोतियों से घर को सुरक्षित रखती है। ऐसे अनेक नारी चरित्रों से इतिहास गौरवान्वित हुआ है। उदाहरण के लिये - झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध साहस और वीरता का परिचय दिया। अहिल्या बाई होलकर ने निमित्त भाव धारण कर अपने राज्य की बागडोर सफलतापूर्वक सम्भाली। माता जीजाबाई ने सुपुत्र वीर शिवाजी को बाल्यकाल से ही निर्भयता, वीरता के पाठ पढ़ाकर चरित्रवान बनाया। सरोजनी नायडू ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। माँ मदलसा ने अपने हर बच्चे को आत्मज्ञान का पाठ पढ़ाकर अलौकिक मार्ग की ओर अग्रसर किया। फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने मरीजों की नि:स्वार्थ सेवा कर विश्व में अनोखी मिसाल कायम की। अत: नारी के अन्तर्मन में शक्तियों का अजस्र स्रोत है। जहाँ-जहाँ उसे अवसर मिले, उसने स्वयं को सर्वश्रेष्ठ एवं सुयोग्य सिद्ध किया है। अब जबकि स्वयं परमात्मा अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान दे रहे हैं तथा ज्ञान कलश बहनों-माताओं के सिर पर रखा है, तो नारियों को विश्वकल्याण के इस महान् कार्य में स्वयं को लगाकर अपने गुणों का सबूत देना है।

नारी चरित्र निर्माता

नारी सृजन-देवी के रूप में प्रतिष्ठित है तो साथ-साथ जीवन के विकास एवं निर्माण की भी ज़िम्मेवार है। इस विकास प्रक्रिया में सन्तान को श्रेष्ठ चारित्रिक मूल्य प्रदान करने का कार्य नारी के हाथों ही सम्पन्न होता है। ऐसे अनेक महान् सपूत मातृ शक्ति ने समाज को प्रदान किये हैं जिनके चरित्रों से विश्व प्रकाशित हुआ है। महात्मा बुद्ध, महावीर, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि आज संसार में महान् विभूतियों के नाम से जाने जाते हैं। ये विभूतियां मातृशक्ति की चरित्र निर्माण की दायित्व भावना से ही निर्मित हुई हैं।

जिस प्रकार कुम्हार, कच्ची मिट्टी के गोले को हाथों का सहारा देकर, दर्शनीय एवं उपयोगी आकार में परिणित कर देता है, उसी प्रकार माँ भी अबोध बालक में, स्नेहपूर्ण पालना एवं मार्गदर्शन से श्रेष्ठ संस्कारों का सिंचन करती है।

माता ही बालक की प्रथम गुरु है, वही बालक की प्रारंभिक पाठशाला है। प्रकृति प्रदत्त गुरुपद द्वारा वह मधुरता, शालीनता, संतुष्टता, गम्भीरता, अनुशासन, ईमानदारी, आत्मसंयम जैसे अनेक गुणों से बालक को सहज ही सुसज्जित कर सकती है। ये वे सच्चे आभूषण हैं, जो मातृशक्ति द्वारा ही बच्चे को पहनाये जा सकते हैं। इसलिए माँ का स्वयं का चरित्र ऊँच और महान् हो, वह गुणों की स्वरूपा हो, यह आवश्यक है।